लेखा परीक्षण : सीएजी ने रोडवेज के 2014 से 19 तक के हालात का किया विश्लेषण

नेताओं के दबाव और अफसरों की नाकामी से डूबा रोडवेज

400 से 700 करोड़ सालाना उठाया नुकसान

शैलेन्द्र अग्रवाल
patrika.com

जयपुर. रोडवेज अपनी नीति की वजह से घाटे में नहीं गया। बल्कि जनप्रतिनिधियों के दबाव और अफसरों की लापरवाही के कारण उसे नुकसान उठाना पड़ा। नेताओं के दबाव में रोडवेज ने पहले तो नुकसान वाले मार्गों पर लग्जरी बस चलाने की मंजूरी दी।

बस थीं नहीं, लिहाजा अफसरों ने सेवा शुरू करने के लिए बसों को किराए पर लिया। किराए की बसों से भी आपूर्ति पूरी नहीं हुई तो अपनी खटारा बसों को रोड पर दौड़ा दिया। अवधिपार बसों को चलाने की वजह से ईंधन और रखरखाव पर ज्यादा खर्चा करना पड़ा। नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) ने अपनी रिपोर्ट में इसका खुलासा किया है। सीएजी ने रोडवेज की अप्रेल 2014 से मार्च 2019 तक की स्थिति का विश्लेषण किया। इस रिपोर्ट में सीएजी ने कहा कि पांच साल में रोडवेज अपनी लागत तक नहीं निकाल सका। हालात यह सामने आए कि रोडवेज को सालाना 450 से 700 करोड़ रुपए तक का नुकसान उठाना पड़ा। इसी बीच एक साल तो यह नुकसान 22 सौ करोड़ रुपए को पार कर गया। सीएजी के परीक्षण में सामने आया कि रोडवेज ने वोल्वो, स्लीपर कोच व सेमी डीलक्स बस किराए पर लेकर जनप्रतिनिधियों के दवाब में उनको बिना फायदे वाले मार्गों पर चलाया। किराए के लिए समय पर बस उपलब्ध नहीं कराने के बावजूद ठेकेदारों पर दरियादिली दिखाई। इसके अलावा रोडवेज अपनी अवधिपार (आउटडेटेड) बसों को भी दौड़ाता रहा। जिससे न केवल उन पर ईंधन का खर्चा ज्यादा आया बल्कि उनके रखरखाव पर भी खासा बजट व्यय हुआ।

रखरखाव पर पूरा खर्च, आय कम

खास बात यह है कि बसों को रोजाना जितने किलोमीटर चलाना चाहिए था, उतना चलाया भी नहीं गया। इससे रखरखाव पर खर्चा तो उतना ही हुआ लेकिन आय कम हुई। सीएजी ने रोडवेज की आर्थिक स्थिति खराब होने के लिए ऐसे ही कुछ कारणों को जिम्मेदार ठहराया है।

गुण दोष पर होता है फैसला

आम जनता की सहुलियत के लिए बसें चलाई जाती हैं। व्यक्ति विशेष की सिफारिश होती भी है तो उस पर गुण दोष के आधार पर फैसला किया जाता है। सीएजी की रिपोर्ट के बारे में मुझे जानकारी नहीं है।

बाबूलाल वर्मा, पूर्व परिवहन राज्यमंत्री

घाटा कम करने की कोशिश

नुकसान को देखते हुए अवधिपार बसों की जगह 900 नई बस खरीदी गईं। पिछली सरकार रोडवेज को 5 हजार करोड़ के घाटे में छोड़ गई। घाटे को लेकर चिंतित हूं। कम करने का प्रयास भी किया। लेकिन कोरोनाकाल में घाटा हुआ है। जो अधिकारी फिजूलखर्ची करते हैं, उन पर सख्ती करेंगे।

प्रताप सिंह खाचरियावास, परिवहन मंत्री